से शुरुआत हुई। यहाँ से स्थायी जीवन की शुरुआत हुई। खाद्यान्न फसलों के ~~निर्माण~~ के साथ सामाजिक वर्ग और संगठनों का आविर्भाव हुआ। अब तक भौतिक मानव एक सामाजिक मानव बन चुका था। नदियों के किनारे पर्याप्त और उपजाऊ भूमि की सुलभता के कारण ही नदी घाटी सभ्यताओं का विकास हुआ।

धीरे-धीरे वनों को साफ कर कृषि योग्य भूमि का निर्माण किया जाने लगा जिसे स्थानान्तरित कृषि भी कहते हैं। भारत में इसे झुम कृषि के नाम से जाना जाता है।

कृषि युग के अंतिम अवस्था में मानव ने स्वनिर्मित पर्यावरण का निर्माण किया जिसे सांस्कृतिक वातावरण के नाम से जाना जाता है जैसे- मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, स्कूल, सड़क, पुल आदि। यह सब उसके विकासशील प्रौद्योगिकी का उदाहरण या परिणाम था। अब तक सामाजिक मानव एक आर्थिक मानव में बदल गया था।

कृषि युग में वातावरण में परिवर्तन और प्रभाव →

- कृषि युग में कृषि योग्य भूमि के लिए बड़े पैमाने पर वनों को जलाया गया था।
- साथ ही सड़क, पुल, नहर आदि के निर्माण कर पर्यावरण में बदलाव लाने कि कोशिश की गई।
- प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन में वृद्धि हुई
- कृषि युग के अंतिम चरण में मानव - पर्यावरण संबंध में थोड़ी कटुता आई।
- फिर भी 1750 तक के विकास तक पर्यावरण पर उतने भी दुष्प्रभाव नहीं पड़े थे। अभी भी मानव पर पर्यावरण का वर्चस्व था।

विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा औद्योगिकरण का काल →

1750 से औद्योगिक क्रांति की शुरुआत हुई। इसके साथ ही साथ मानव और पर्यावरण के शत्रुतापूर्ण स्थिति का प्रारंभ हुआ। आर्थिक नियतिवाद के अतिवाद के कारण संसाधनों का अंधाधुंध

प्रयोग हुआ। प्रौद्योगिक मानव की प्रौद्योगिकी मानलेवा साबित होने लगी। संसाधनों के अति दोहन से पर्यावरण में असंतुलन की स्थिति पैदा हो गई तथा कई पर्यावरणीय समस्या सामने आई।

मानव और प्रकृति के पारस्परिक संबंध से जुड़े चिंतन

मानव और प्रकृति का संबंध आरंभ से ही दार्शनिक चिंतन का प्रमुख विषय रहा है। शुरुआती चिंतन के अनुसार संसार भगवान द्वारा रचित रंगमंच था जिसमें क्या घटित होगा यह रंगमंच की संरचना पर निर्भर करता है साथ ही साथ मानव पर्यावरण अंतर्संबंध इस बात पर भी निर्भर करता है कि स्थानीय वातावरण वहाँ के लोगों के लिए उदार है या कठिनाइयों से भरा। उदा० के लिए भारत और चीन जैसे देशों के लिए वहाँ का वातावरण उदार और मैत्रीपूर्ण है इसलिए पर्यावरण के साथ उनका संबंध भी पर्यावरण के साथ सह-